अध्याय–पंचम
(सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव)

सारांश :–

मनुष्य के पास भाषा ही एकमात्र ऐसा साधन है, जो मनुष्य का सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करती है । विश्व में कुल मिलाकर तेरह ऐसी भाषाएँ हैं, जिनके बोलने वालों की संख्या 60 करोड़ से अधिक है । विश्व में हिन्दी भाषा को तृतीय स्थान प्राप्त है । आज अपने देश में हिन्दी बोलने वालों की संख्या 30 करोड़ है । भारत में हिन्दी मातृभाषा, द्वितीय भाषा, तृतीय भाषा के रूप में बोली, लिखी जाती है । प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य "हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी विद्यार्थियों का कक्षा आठवीं स्तर पर लेखन त्रुटियों का अध्ययन" करना है । इस अध्ययन के लिए मध्यप्रदेश का (सीहोर) तथा महाराष्ट्र के (जलगाँव) का चयन किया गया । हिन्दी देश को तोड़ने वाली भाषा नहीं बल्कि जोड़ने वाली भाषा है ।

इस अध्ययन की आवश्यकता पर प्रकाश डालने हुए कहा जा सकता है कि, आज हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्र में विद्यार्थियों तथा उनको पढ़ाने वाले अध्यापकों द्वारा हिन्दी लेखन त्रुटियों की प्रचुरता बढ़ाते हुए अशुद्ध हिन्दी का प्रयोग कर रहे है । इस अध्ययन में विद्यार्थियों की लेखन त्रुटियों पर ध्यान दिया गया । आज कक्षा में अध्यापकों द्वारा असंख्य प्रयास करने के बावजूद भी विद्यार्थियों द्वारा नियमित लेखन में कई प्रकार की त्रुटियाँ और उसमें किसी प्रकार का सकारात्मक परिवर्तन न आना हम सभी के लिए चिंतनीय विषय है । इस अध्ययन की नितांत आवश्यकता रही कि, हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी विद्यार्थी, अनुच्छेद लेखन करते समय किस प्रकार की लेखन त्रुटियाँ करते हैं ।

हिन्दी का उत्तर भारत में मातृभाषा के रूप में मौखिक एवं लिखित प्रयोग होता है । मातृभाषा हिन्दी सरल, सरस एवं रोचक होने के कारण हम अपनी भावनाओं, संवेदनाओं को अपनी भाषा में ज्यादा प्रभावी तरीके से व्यक्त करते है । राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी का कहना था "मनुष्य के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उतनी ही आवश्यक है जितना शिशु के लिए शारीरिक विकास के लिए माता का दूध।"

द्वितीय या तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी आज देश के अधिकांश भागों में यह बोली, लिखी जाती है । का हिन्दी भाषा को जितना सम्मान हिन्दी प्रदेशों में नहीं उससे कई गुना महत्व अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी को है । आज अच्छे–अच्छे हिन्दी के आचार्यों, विद्वानों, अनुसंधानकर्ताओं का मानना है कि, हिन्दी भाषी विद्यार्थियों से कई गुणा हिन्दी सीखने का प्रयास अहिन्दी भाषी विद्यार्थी करते है । अतः स्पष्ट है कि, अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में भी हिन्दी का बहुत महत्व है ।

अध्ययन के उद्देश्य :–

हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्र के विद्यार्थियों का निम्नलिखित प्रकार लेखन त्रुटियों का तुलनात्मक अध्ययन –

1. हिन्दी भाषी क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी।
2. अहिन्दी भाषी क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी।
3. हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्र के शहरी विद्यार्थी।
4. हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्र के ग्रामीण विद्यार्थी।
5. हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्र के छात्र ।
6. हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्र की छात्राएँ ।

शोध चर

1. स्वतंत्र चर

   लिंग – छात्र/छात्राएँ

   कक्षा – आठवीं के विद्यार्थी

2. आश्रित चर

   हिन्दी विषय में होने वाली विभिन्न त्रुटियाँ

   अन्य मातृभाषा

शोध उपकरण :–

प्रस्तुत शोधकार्य के लिए उपकरण शोधकर्ता द्वारा प्रायोगिक विद्यालय (रा.शै.अ.प्र.प.) कक्षा आठवीं में पढ़ाई जा रही हिन्दी पुस्तक "सरस भारती" भाग–3 में से अनुच्छेद लिया गया। अनुच्छेद की जाँच सम्बन्धित विषय शिक्षकों से करायी गई । हिन्दी तथा अहिन्दी (मध्यप्रदेश तथा महाराष्ट्र) विद्यार्थियों के आँकड़े एकत्र करने के लिए एक ही अनुच्छेद उपकरण का उपयोग किया गया ।

परिकल्पना :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा अध्ययन उद्देश्यों के आधार पर परिकल्पनाएँ बनायी गई है जो अग्रलिखित प्रकार है –

H_1 हिन्दी भाषी क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के बीच लेखन त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं है ।

H_2अहिन्दी भाषी क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के बीच लेखन त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं है ।

H_3हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्र के शहरी विद्यार्थियों के बीच लेखन त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं है ।

H_4हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्र के ग्रामीण विद्यार्थियों के बीच लेखन त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं है ।

H_5हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी छात्रों के बीच लेखन त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं है ।

H_6हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी छात्राओं के बीच लेखन त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श का चयन :–

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु न्यादर्श के लिए मध्यप्रदेश राज्य के सीहोर जिले में से सीहोर तहसील का एक शहरी विद्यालय तथा पचामा ग्राम का एक ग्रामीण सह–शिक्षा शासकीय विद्यालयों का चयन किया गया । महाराष्ट्र राज्य के जलगाँव जिले में से अमलनेर तहसील का एक शहरी तथा शिरूड ग्राम का एक ग्रामीण सह–शिक्षा शासकीय विद्यालयों का चयन किया गया ।

शोध सीमाएँ :–

मध्यप्रदेश राज्य के सीहोर जिले में सीहोर तहसील से कक्षा आठवीं के 40 छात्र/छात्राओं तथा ग्राम पचामा तहसील सीहोर से 40 छात्र/छात्राओं को लिया गया । महाराष्ट्र राज्य का जलगाँव जिले के अमलनेर तहसील से 40 छात्र/छात्राओं तथा ग्राम शिरूड तहसील अमलनेर के 40 छात्र/छात्राओं को लिया गया । परिसीमन लेखन तक सीमित है । सुविधानुसार न्यादर्श को लिया गया तथा समय अभाव के कारण न्यादर्श को सीमित रखा गया है ।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :–

प्रदत्तो का विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए कुल लेखन त्रुटियों को जोड़ना, मध्यमान (M), मानक विचलन (S.D.) मानक त्रुटियाँ (S.E.), स्वतंत्रता की कोटी (d.f.) टी का परीक्षण (t) इन सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है ।

निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा शून्य परिकल्पनाओं विश्लेषण, व्याख्या करने के बाद निम्नलिखित प्रकार निष्कर्ष प्राप्त हुए –

1. विद्यार्थी अनुच्छेद लेखन से यह पाया गया कि जल्दबाजी, लापरवाही तथा नियमित लेखन न करने की आदत के कारण लेखन कठिनाई अनुभव की गई ।
2. अरूचि, असावधानी के कारण मात्रात्मक, बिन्दुगत, चिह्नों, नुक्ता तथा संयुक्ताक्षर इस प्रकार की लेखन त्रुटियाँ सभी विद्यार्थियों ने लगभग की ।
3. मातृभाषा, बोलीभाषा प्रभाव तथा उचित वातावरण अभाव के कारण विद्यार्थियों ने अनुच्छेद लेखन में त्रुटियाँ की ।
4. विद्यार्थियों को हिन्दी का शुद्ध वर्तनी रूप, व्याकरण के नियमों की जानकारी न होने के कारण लेखन त्रुटियाँ हुई ।

सुझाव :–

1. प्रस्तुत शोध विस्तृत न्यादर्श पर किया जाए, जिसमें परिकल्पनाओं का परीक्षण और अधिक स्पष्ट हो सके ।
2. "केन्द्रीय हिन्दी निर्देशालय" द्वारा मानकीकृत हिन्दी वर्तनी रूप से सभी विद्यार्थियों को शिक्षकों द्वारा अवगत किया जाना चाहिए ।
3. इस प्रकार के शोधकार्य शिक्षा के प्रारंभिक, माध्यमिक स्तर पर भी किया जा सकता है ।
4. विद्यार्थियों क़ी विभिन्न प्रकार हिन्दी लेखन कठिनाईयों का पता लगाकर शिक्षकों द्वारा उपचारात्मक लेखन शिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिए ।
5. प्रस्तुत शोध शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयीन विद्यार्थियों पर किया जा सकता है ।